अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

अपठित गद्यांश – परिचय

अपठित का अर्थ होता है 'जो पढ़ा नहीं गया हो'। यह किसी पाठ्यक्रम की पुस्तक में से नहीं लिया जाता है। यह कला, विज्ञान, राजनीति, साहित्य या अर्थशास्त्र, किसी भी विषय का हो सकता है। इनसे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। इससे छात्रों का मानसिक व्यायाम होता है और उनका सामान्य ज्ञान भी बढ़ता है। इससे छात्रों की व्यक्तिगत योग्यता व अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है।

विधि

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ना चाहिए।

2. गद्यांश पढ़ते समय मुख्य बातों को रेखांकित कर देना चाहिए।

3. गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देते समय भाषा एकदम सरल होनी चाहिए।

4. उत्तर सरल व संक्षिप्त व सहज होने चाहिए। अपनी भाषा में उत्तर देना चाहिए।

5. प्रश्नों के उत्तर कम-से-कम शब्दों में देने चाहिए, साथ हीं गद्यांश में से हीं उत्तर छाँटने चाहिए।

6. उत्तर में जितना पूछा जाए केवल उतना हीं लिखना चाहिए, उससे ज़्यादा या कम तथा अनावश्यक नहीं होना चाहिए। अर्थात, उत्तर प्रसंग के अनुसार होना चाहिए।

7. यदि गद्यांश का शीर्षक पूछा जाए तो शीर्षक गद्यांश के शुरु या अंत में छिपा रहता है।

8. मूलभाव के आधार पर शीर्षक लिखना चाहिए।

अपठित पद्यांश - परिचय

अपठित पद्यांश का अर्थ है 'वह कविता का अंश या कविता जो पहले पढ़ी न गई हो'। अपठित पद्यांश में किसी कविता का एक अंश दिया जाता है तथा उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। यह कविता किसी (अर्थात उसी कक्षा के) पाठ्यक्रम की पुस्तक में से नहीं दी जाती है। इसे पढ़कर इससे सम्बन्धित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। इससे छात्रों की कविता पढ़ने और समझने की क्षमता का विकास होता है।

विधि

इनको हल करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना अनिवार्य है।

1. कविता को दो-तीन बार पढ़ना चाहिए, जिससे उसका भाव और अर्थ अच्छी तरह समझ में आ जाए।

2. कविता को समझकर उत्तर देने चाहिए।

3. प्रश्नों के उत्तर कविता की लाइनों में नहीं देने चाहिए, बल्कि अपने शब्दों में गद्य में देने चाहिए।

4. उत्तर सरल, स्पष्ट और कम शब्दों का प्रयोग करके भावों के साथ व्यक्त करना चाहिए।

अपठित गद्यांश 1

वेद शब्द संस्कृत की 'विद्' से बना है, जिसका अर्थ है – 'ज्ञान' अर्थात् 'जानना'। हालाँकि प्राचीन काल से आज तक का ज्ञान इसकी परिधि में समाहित हो जाता है, परंतु वेद से तात्पर्य चार वेदों से हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ये वेद विश्व के प्राचीनतम साहित्य हैं। वेद अभीष्ट प्राप्ति और अनिष्ट को दूर करने के उपाय बताते हैं। वस्तुत: वेद सर्वहितकारी ज्ञान का अमित भंडार हैं।

यद्यपि सामान्य-जन वेदों के नाममात्र से ही परिचित है। वह वेदों के मंत्रों या विषय-वस्तु से परिचित नहीं है, पर उसकी श्रद्धा और आस्था इनके प्रति अटूट दिखाई पड़ती है। इसके मूल में कारण यही है कि इन वेदों की उपयोगिता आज भी बनी हुई है। हम भारतीयों का जीवन वेदों से ओत-प्रोत है। हमारी विचारधारा, संस्कार और उपासना वेदों से अनुप्राणित है।

इसका परिलक्षण हमें दैनिक अनुष्ठानों में होता है। शुभ कार्य करने के समय, विवाह तथा जन्म आदि मांगलिक अवसरों पर वेद मंत्रों का उच्चारण किया जाता है। पूजा-पाठ में गायत्री मंत्र का पाठ बहुत-से लोग करते हैं। वेदों को प्रामणिक उदाहरण माना जाता है। उचित और अनुचित की स्थिति भी वेद आधारित मानी जाती है।

यद्यपि यह बात आज की शिक्षा पद्धति के संदर्भ में सही है कि सामान्य एवं शिक्षित जन वेद-शिक्षा से अनभिज्ञ हैं, उन्होंने वेद संहिताओं को देखा भी नहीं है, फिर भी वेदों के प्रति अटूट श्रद्धा है। वेद की भाषा, विषय-वस्तु आदि को जानने-समझने का अवसर न मिलने पर भी वेद की प्रामणिकता की बात हम श्रद्धा से करते हैं।

इसका कारण यह है कि वेदों के प्रति यह गहन श्रद्धा-भाव हमारे जनमानस में युग-युग से पुष्ट होता रहा है। वेद हमारी संस्कृति और धर्म में इस प्रकार रच-बस गए हैं कि उनके बिना हम किसी भी प्रकार के विकास की कल्पना नहीं कर सकते। मानव जाति के विकास, रहन-सहन, आचार-व्यवहार, रीति-नीति, भाषा-विज्ञान, संगीत, धर्म और संस्कृति से जुड़े वेदों के प्रति हमारे अंदर आदर भाव है।

प्रश्न:1 वेद का क्या अर्थ है?

(क) ज्ञान

(ख) उपदेश

(ग) धर्म

(घ) यज्ञनियम

उत्तर: (क) ज्ञान अर्थात जानना

प्रश्न:2 उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

(क) वेद

(ख) वेदों की उपयोगिता

(ग) वेदों का निर्माण

(घ) वेदशास्त्र

उत्तर: (क) वेदों की उपयोगिता

प्रश्न:3 वेद हमें क्या उपाय बताते हैं?

(क) अभीष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट को दूर करने के उपाय

(ख) वातावरण को शुद्ध रखने के उपाय

उत्तर: (क) अभीष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट को दूर करने के उपाय

प्रश्न:4 वेद शिक्षा में कौन-से समास का प्रयोग किया गया है?

(क) कर्मधारय

(ख) द्विगु समास

(ग) तत्पुरुष समास

(घ) द्वंद्व समास

उत्तर: (ग) तत्पुरुष समास

अपठित गद्यांश 2

जब बंगला के श्रेष्ठ कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर को उनकी पुस्तक 'गीतांजलि' पर नोबेल पुरस्कार मिला, तब से हिंदी कवियों को भी उसी प्रकार की रचनाएँ लिखने की प्रेरणा मिली और अर्थ-अनर्थ का बहुत विवेक किए बिना अनेक कवियों में अनेक रहस्यवादी रचनाओं का सृजन किया, जिनमें से अधिकाँश शीघ्र ही काल के प्रवाह में बहकर समाप्त हो गईं। केवल गिनती के दो-चार कवि इस क्षेत्र में टिक पाये।

परंपरागत अर्थो में रहस्यवाद आत्मा और परमात्मा के संबंध में रचित काव्य है। पर आज की रहस्यवादी रचनाओं को समग्रत: ऐसा नहीं कहा जा सकता। इस सृष्टि में आकर मनुष्य अपने चारों ओर जो कुछ देखता है, वह एक विचित्र रहस्य से आवृत्त है। बड़े-बड़े महर्षि भी युगों तक खोज करके इस समस्त विश्व-प्रपंच के रहस्य का उदघाटन नहीं कर पाए हैं, किंतु दीर्घकाल तक विचार और साधना करने के पश्चात उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि इस समस्त संसार का संचालन किसी अदृश्य सत्ता द्वारा हो रहा है।

उस अदृश्य सत्ता को ब्रह्म या परमात्मा भी कहा जा सकता है। उस अदृश्य सत्ता को खोजने और उससे मिलने के लिए वे साधक बेचैन हो उठे। जब एक बार उस सत्ता का ज्ञान हो गया फिर उससे मिले बिना चैन कहाँ। ऐसी दशा में विरह की व्याकुलता का वर्णन अनेक साधकों ने बड़े मर्मस्पर्शी शब्दों में किया है, किंतु इसमें कठिनाई यह है कि जिस ब्रह्म या अज्ञात सत्ता के प्रेम में वे पागल हो उठे हैं, उसके गुणों का या रुप का कुछ वर्णन कर पाना संभव नहीं है।

सभी साधकों ने एक स्वर से यही बात कही है - वह बुद्धि और तर्क से परे है। उसे इंद्रियों द्वारा जाना नहीं जा सकता, किंतु हृदय द्वारा उसका अनुभव किया जा सकता है, परन्तु यह अनुभव गूँगे के गुड़ के समान है। उस अनुभव का आनंद तो लिया जा सकता है, किंतु उसका वाणी से वर्णन नहीं किया जा सकता। उसके लिये उपयुक्त शब्द ही भाषा में नहीं। इसका परिणाम यह होता है कि उसे अपने भाव को व्यक्त करने के लिए प्रतीक-शैली का सहारा लेना पड़ता है। इन प्रतीकों के द्वारा भी कवि अपने भाव को पूरा स्पष्ट नहीं कर पाता, पर फिर भी उसकी कुछ न कुछ झलक अवश्य पाता है।

प्रश्न:1 रहस्यवाद क्या है?

(क) आत्मा और परमात्मा के संबंध में रचित काव्य

(ख) प्रकृति पर रचित काव्य

उत्तर: (क) आत्मा और परमात्मा के संबंध में रचित काव्य

प्रश्न:2 कवियों ने अज्ञात सत्ता को बताने के लिए क्या किया?

(क) वाणी का प्रयोग

(ख) साधकों का प्रयोग

(ग) साधना का प्रयोग

(घ) प्रतीकों का प्रयोग

उत्तर: (घ) प्रतीकों का प्रयोग

प्रश्न:3 गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

(क) कवि रविंद्रनाथ

(ख) कवि और कविता

(ग) रहस्यवाद

(घ) विश्व प्रपंच

उत्तर: (ग) रहस्यवाद

प्रश्न:4 'अज्ञात' शब्द का अर्थ बताइए।

(क) अकेला

(ख) अनजान

(ग) रहस्य

(घ) बेचैन

उत्तर: (ख) अनजान

प्रश्न:5 ब्रह्म का वर्णन करने में क्या कठिनाई है?

(क) वह वर्णित नहीं किया जा सकता

(ख) वह तर्क से हीं बता दिया जाता है

उत्तर: (क) वर्णित नहीं किया जा सकता

अपठित गद्यांश 3

भारत गाँवों का देश है। देश की 80% आबादी गाँवों में निवास करती है। भारत में किसानों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत में यद्यपि स्वतंत्रता के पश्चात् गाँवों की दशा में सुधार अवश्य आया है किंतु जितना सुधार होना चाहिए, उतना नहीं हो पाया है। भारतीय किसान अभी भी गरीब और साधनहीन हैं।

भारतीय किसान सादगी की मूर्ति होता है। वह शहरी छल-कपट से दूर सीधी-साधी ज़िन्दगी बिताता है। उसे कोई भी अपनी स्वार्थ-सिद्धि का साधन बना सकता है। वह सभी पर सहज विश्वास कर लेता है। कभी-कभी वह धोखा भी खा जाता है, किंतु अपना स्वभाव नहीं बदलता। खेत-खलिहान, गाय-बैल, हल हीं उसके साथी हैं।

परन्तु, इन्हीं गाँवों के घरों से जब ग्रामीण बाहर आते हैं तो उनकी चमकती आँखें और भोली शक्लें देखकर किसका चित्त नहीं प्रसन्न हो जाता। लहलहाते खेतों को देखकर पता चलता है कि भारतीय किसान अत्यन्त परिश्रमी हैं। जब खेतों में पीली सरसों की चादर बिछी होती है या गेहूँ की सुनहरी बालें खेतों में लहलहाती हैं, तो चित्त आह्लादित हो जाता है।

गाँव में चक्की के मधुर स्वर से प्रभात का आरंभ होता है। यहाँ उषा की लालिमा अपने हाथों में सोने का थाल लिए आती है। पेड़ों तथा लताकुंजों में पक्षी प्रभात-बेला का स्वागत करते हैं। सूर्य की पहली किरण के साथ उठकर किसान अपने कंधे पर हल रखकर अपने सखा बैलों को हाँकता हुआ खेतों की ओर जाता है, तो बैलों के गले में बँधी घंटियों से आस-पास का वातावरण गुंजित हो उठता है।

भारतीय गाँवों में सिंचाई के भिन्न-भिन्न साधन अपनाए जाते हैं। पर्वतों के गाँवों में नाले या झरने के साधन हैं। मैदानी क्षेत्रों में कुएँ हैं, जिनमें रहट चलाए जाते हैं और कई स्थानों पर बिजली आ जाने से ट्यूबवैल लग गए हैं और कई स्थानों पर नहरें बन जाने से सिंचाई सुलभ हो गई है।

गाँवों में नवयुवक ऊँचा, बलिष्ठ शरीर और मुस्कुराता मुखड़ा लिए हुए सबसे मिलते हैं। इसमें कई कारखानों में काम करने शहर जाते हैं और कड़ा परिश्रम करके जीविका उपार्जित करते हैं। ये ही सेना में भर्ती होकर राष्ट्र की सेवा करते हैं।

गाँवों की स्त्रियाँ भी बहुत परिश्रमी होती हैं। बैल-गाय-भैंस की सानी करती हैं। सिर पर मटके उटाकर पनघट पर जाती हैं। यहाँ अपनी सहेलियों से सुख-दुःख की चर्चा करती हैं। ये गाँव की गृह-लक्ष्मियाँ हैं। इन्हीं की बदौलत हमारे गाँव गरीबी में भी सुख के आगर बने हुए हैं। जहाँ बिजली आ जाने के कारण पीने का पानी भी सुलभ हो गया है, वहाँ स्त्रियाँ कढ़ाई-बुनाई-सिलाई में भी रुचि लेने लगी हैं। कुछ चतुर किसान शाक-भाजी और फ़लों की भी खेती करते हैं। उनके परिवार को इन चीज़ों की बहुत मौज हो जाती है।

परंतु कुल मिलाकर हमारे गाँव अभी दरिद्र हैं। अधिकाँश के पास अपनी भूमि नहीं है। छोटे किसान तंग हैं और शिक्षा का भी पूरी तरह प्रसार अभी तक नहीं हो पाया है। भारतीय गाँवों के सुधार के लिए अभी भारत सरकार और राज्य-सरकारों को बहुत प्रयत्न करना होगा। सरकार इसी दिशा में प्रयत्नशील है। इन प्रयासों में तेज़ी लानी होगी। गाँवों की तरक्की से ही तरक्की होगी।

प्रश्न:1 भारत को कैसा देश बताया गया है?

(क) शहरों का देश

(ख) गाँवों का देश

(ग) गरीबों का देश

(घ) पर्वतों-झरनों का देश

उत्तर: (ख) गाँवों का देश

प्रश्न:2 गद्यांश में से दो भाववाचक संज्ञा लिखो।

(क) लालिमा, विश्वास

(ख) ऊँचा, बलिष्ठ

(ग) बिजली, पानी

(घ) फ़ल, खेती

उत्तर: (क) लालिमा, विश्वास

प्रश्न:3 गाँवों की स्त्रियाँ कैसी होती हैं?

(क) अनपढ़

(ख) दरिद्र

(ग) परिश्रमी

(घ) आलसी

उत्तर: (ग) परिश्रमी

प्रश्न:4 कुल मिलाकर गाँवों की अभी भी क्या दशा है?

(क) किसान सुखी हैं

(ख) गाँवों में खुशहाली है

(ग) गाँवों में सुधार आया है

(घ) किसानों के जीवन में सुविधाओं का अभाव है

उत्तर: (घ) किसानों के जीवन में सुविधाओं का अभाव है

प्रश्न:5 'स्वार्थ' शब्द का विलोम शब्द बताइए।

(क) स्वार्थी

(ख) परमार्थ

(ग) पागल

(घ) कर्मठ

उत्तर: (ख) परमार्थ

अपठित गद्यांश 4

चरित्र-भ्रष्ट व्यक्ति का समाज में कोई स्थान नहीं होता। उसे प्रत्येक व्यक्ति अपमान की दृष्टि से देखता है। सच्चरित्रता ही व्यक्ति के मान, आदर, यश और सुख की एकमात्र कुंजी है।

चरित्र के दो अर्थ हैं - एक तो शरीर के संयम को चरित्र कहते हैं; दूसरा, व्यक्ति के सद्व्यवहारों का नाम चरित्र है। अपनी पत्नी के प्रति प्रेम (सत्प्रेम) और अनुरक्ति चरित्र का पहला गुण है। साथ ही अन्य नारियों पर माता और बहन की दृष्टि रखना चरित्र के पहले गुण का दूसरा रुप है। चरित्र का दूसरा अर्थ सद्व्यवहार है। चरित्रवान् व्यक्ति दैनिक जीवन में छोटी-से-छोटी बात पर ध्यान देते हैं।

आज समाज में ऊपर से चरित्रवान दिखने वाले व्यक्ति बहुत हैं। अनेक पाप करने वाले ऊपर से ऐसे आडम्बरपूर्ण स्वरुप दिखलाएँगे जिनसे लगेगा कि वे बड़े चरित्रवान हैं, परन्तु उनकी अंतरात्मा इतनी दूषित होती है कि क्या कहें, दिन भर रिश्वतखोरी, चोरबाज़ारी, झूठ और वासना में डूबे रहेंगे और शाम को मंदिर पर जाकर ग्यारह रुपए का प्रसाद चढ़ायेंगे; वहाँ पुजारी जी एक बड़ी-सी माला लालाजी के गले में डाल देंगे और लालाजी गली-चौराहे पर 'भगतजी' के नाम से नमस्कार और अभिवादन स्वीकारते हुए घर लौटेंगे।

अब आप ज़रा सोचिए कि जब केवल सच्चरित्रता के आडम्बर मात्र से मनुष्य इस प्रकार की प्रतिष्ठा पा लेता है, तो वास्तविक सच्चरित्रता से क्या कुछ नहीं पा सकेगा?

आचरण की पवित्रता के महत्त्व एवं प्रभाव को प्रदर्शित करने वाले ऐसे कई उदाहरण मिल जाएँगे जिनमें एक या बहुत थोड़े से सदाचारी व्यक्तियों के कारण मात्र उनके परिवार की नहीं बल्कि देश और जाति की उन्नति हुई है और वे सम्मान के शिखर पर पहुँच गए।

सदाचारी व्यक्ति के चरित्र का प्रभाव उसके सम्पर्क में आने वाले लोगों पर ही नहीं बल्कि समाज के बहुत बड़े भाग पर पड़ता है और उससे नैतिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उत्थान होता है। ऐसे सदाचारी व्यक्ति पर कोई भी जाति या राष्ट्र गर्व से अपना मस्तक ऊँचा कर सकते हैं। सच्चरित्रता वह धन है जिसके सामने धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य सब तुच्छ हैं। विद्या, धन और शक्ति का सदुपयोग भी सदाचारी व्यक्ति हीं कर सकता

है। यदि ये ही चीजें किसी विवेकहीन दुष्ट मनुष्य को प्राप्त हो जाएँ तो दोनों द्वारा किस प्रकार उनका सदुपयोग और दुरुपयोग होगा, इसके अन्तर को स्पष्ट करते हुए संस्कृत की एक सूक्ति में कहा गया है -

"विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।"

प्रश्न:1 चरित्र के दो अर्थ कौन से हैं?

(क) शरीर का संयम और सद्व्यवहार

(ख) जाति की उन्नति व राष्ट्रीय उत्थान

उत्तर: (क) शरीर का संयम और सद्व्यवहार

प्रश्न:2 चरित्र भ्रष्ट व्यक्ति की क्या दशा होती है?

(क) परिवार वाले नहीं पूछते

(ख) समाज में कोई स्थान नहीं होता

उत्तर: (ख) समाज में कोई स्थान नहीं होता

प्रश्न:3 आज के लोगों की असलियत क्या है?

(क) आडंबरपूर्ण जीवन

(ख) समय का दुरुपयोग करना

उत्तर: (क) आडंबरपूर्ण जीवन

प्रश्न:4 'सच्चरित्रता' शब्द से प्रत्यय अलग करो।

(क) तता

(ख) त्रता

(ग) ता

(घ) इता

उत्तर: (ग) ता

प्रश्न:5 गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

(क) चरित्र

(ख) सच्चरित्रता

(ग) आचरण

(घ) चरित्रवान्

उत्तर: (ख) सच्चरित्रता

अपठित गद्यांश 5

स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता दोनों का वास्तविक अर्थ एक ही है। वह अर्थ है अपना अवलंब अर्थात् आश्रय या सहारा आप बनना, किसी दूसरे पर बोझ न बनकर या निर्भर अर्थात् आश्रित न रहकर अपने-आप पर निर्भर या आश्रित रहना। इस प्रकार दोनों शब्द परावलंबन या पराश्रिता त्यागकर, स्वयं परिश्रम करके, सब प्रकार के दुख-कष्ट सह कर भी अपने पैरों पर खड़े रहने की शिक्षा और प्रेरणा देने वाले शब्द हैं।

संसार में परावलंबी, यानि दूसरों पर आश्रित होना या निर्भर रहना एक प्रकार का पाप, सर्वाधिक हीन कर्म और आदमी के अंत: बाह्य व्यक्तित्व को एकदम हीन तथा बौना बनाकर रख देने वाला हुआ करता है। पराश्रित या परावलंबी को हमेशा आश्रय आधार देने वालों के अधीन बनकर रहना पड़ता है। उनके इशारों पर नाचने की बाध्यता और विवशता रहा करती है।

उनकी अपनी इच्छा पहले तो होती हीं नहीं, होने या रहने पर भी उसका कोई मूल्य और महत्त्व नहीं रहा करता। वह चाह कर भी उसके अनुसार न तो कार्य ही कर सकता है और न उसे कभी पूर्ण होते हुए हीं देख सकता है। तनिक-सी इच्छा और बात के लिए उसे पराया मुँह देखना पड़ता है। अपना मन जान-बूझ कर मारना पड़ता है। इसी कारण पराधीनता या परावलंबन को घोर पाप और निकृष्ट माना गया है। इसके विपरीत स्वाधीनता एवं स्वावलंबन को स्वर्ग का द्वार, पुण्य-कार्यों का परिणाम और सब प्रकार से श्रेष्ठ स्वीकार किया गया है।

आत्मनिर्भर व्यक्ति हीं सही अर्थों में जान पाया करता है कि दुख-पीड़ा क्यों होती है और सुख-सुविधा का क्या मूल्य एवं महत्त्व, कितना आनंद और आत्मसंतोष हुआ करता है। संसार और समाज में व्यक्ति का क्या मूल्य और महत्त्व हुआ करता है, मान-सम्मान किसे कहते हैं, अपमान की पीड़ा क्या होती है, अभाव किस तरह से व्यक्ति को मर्माहत किया करते या कर सकते हैं, इस प्रकार की बातों का यथार्थ भी वास्तव में आत्मनिर्भर व्यक्ति ही जान-समझ सकता है।

परावलंबी को तो हमेशा मान-अपमान की चिंता त्यागकर, हीनता के बोध से परे रहकर व्यक्तित्वहीन बनकर जीवन गुज़ार देना पड़ता है। व्यक्तित्वहीन जीवन वास्तव में निरीह पशु और कीड़े-मकोड़े से अधिक महत्त्व नहीं रखा करता। वास्तविकता यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने को दीन-हीन बनाए रखना

नहीं चाहता। सहज, सरल मानव बनकर रहने, मानवीय सम्मान और गरिमा पाने की भूख हर मनुष्य में जन्मजात रुप से रहा करती है। स्वावलंबी बन कर हीं उसे पूरा किया जा सकता है।

प्रश्न:1 स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता दोनों का वास्तविक अर्थ क्या है?

(क) बाह्य व्यक्तित्व

(ख) अवलंब

(ग) आत्मसंतोष

(घ) व्यक्तित्वहीन

उत्तर: (ख) अवलंब अर्थात अपना सहारा आप बनना

प्रश्न:2 परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए।

(क) मान-सम्मान

(ख) स्वावलंबन

(ग) व्यक्तित्वहीन जीवन

(घ) आत्मसंतोष

उत्तर: (ख) स्वावलंबन

प्रश्न:3 'परावलंबन' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।

(क) परा + लंबन

(ख) परा + वलंबन

(ग) पर + अवलंबन

(घ) प + रावलंबन

उत्तर: (ग) पर + अवलंबन

प्रश्न:4 परावलंबन का क्या अर्थ है?

(क) दूसरे पर आश्रित रहना

(ख) आत्मनिर्भर व्यक्तित्व रहना

उत्तर: (क) दूसरे पर आश्रित रहना

प्रश्न:5 'पीड़ा' शब्द का समानार्थक शब्द बताइए।

(क) दुख

(ख) सुख

(ग) आनन्द

(घ) मंगल

उत्तर: (क) दुख

अपठित गद्यांश 6

हम आध्यात्मिक उन्नति करते हैं, पर आध्यात्मिक उन्नति के लिए मानसिक क्षमता का विकास भी बेहद ज़रुरी है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भौतिक, आध्यात्मिक तथा मानसिक ⁻इन तीनों के विकास का मार्ग व साधन है पर्यटन।

अब सवाल है कि पर्यटन अर्थात् देश-देशांतर का भ्रमण सतयुग के समान क्यों है? हम सतयुग उस काल को मानते हैं जिसमें सत्य और जीवन की रक्षा के लिए सभी क्रियाएँ होती हैं। यह धारणा भी है कि चलना अर्थात् कुछ करना हीं जीवन है। इसके विपरीत निष्क्रय हो जाना या फिर रुक जाना मृत्यु के समान है। इन अर्थों में पर्यटन की क्रिया सतयुग की क्रिया कहला सकती है।

पर पर्यटन में सात्विकता का समावेश भी होना चाहिए। प्राकृतिक सुषमा, भौगोलिक विशिष्टता और आध्यात्मिक ऊर्जा के मामले में भारत एक अग्रणी राष्ट्र है। व्यापक अर्थ में तो पूरे भारत को ही देवभूमि कहा जाता है। ऐसे में यहाँ पर्यटन का अर्थ है–स्वयं में देवत्व की स्थापना करना। भारत का पर्यटन भौतिकता की जड़ता से बाहर निकलकर शारीरिक व मानसिक स्तर पर आध्यात्मिक लक्ष्य को हासिल करना है। इस अर्थ में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–इन चारों पुरुषार्थों में संतुलन स्थापित करके जीने की कला का विकास करने का नाम है पर्यटन।

हमारे देश में पर्यटन माध्यम है, एकता के सूत्र में पिरोने की कोशिश का। अनेकता में एकता की स्थापना हेतु मंदिर, मसजिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे, पीर-फ़कीरों के मज़ार और दरगाह सभी धर्मों के लोगों को एक सूत्र में बाँधते हैं। देश के चारों कोनों में आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार मठ धर्म के माध्यम से देश को जोड़ते हैं। वहीं कई ऐतिहासिक महत्त्व की भी मीनारें, विशाल दरवाज़े, शानदार महल, किले तथा अन्य स्मारक पर्यटकों को अपनी ओर खींचते हैं। यह खींचना भी अलग-अलग धर्मों के, मतों के लोगों को एक

साथ लाना है। धर्म-दर्शन, अध्यात्म, पुरातत्व, शिल्प और कलाएँ इन सबके माध्यम से पर्यटन ही तो जोड़ता है देश को।

पर्यटन अपने आप में योग-साधना भी है– यम, निटल, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि पतंजलि ने योग के आठ अंग बताए हैं। ये सभी पर्यटन में सम्मिलित हैं। पर्यटन का आरंभ होता है शारीरिक श्रम से। पैदल चलना या ट्रेकिंग, ये शारीरिक श्रम के हीं रुप हैं, जो योग में वर्णित आसन और प्राणायाम के अभ्यास के समान हैं।

जब कोई पर्यटक नैसर्गिक सौंदर्य और मानव द्वारा निर्मित शिल्प कलाओं को भूख-प्यास भूलकर एकटक निहारता है, तो एक वैरागी अपने सारे दुख, तकलीफ़ और सफ़र की थकान को भूल जाता है। इस तरह पर्यटक प्रत्याहार, धारणा और ध्यान की अवस्थाओं से गुज़रकर समाधि की अवस्था में पहुँच जाता है। इस प्रकार पर्यटन अपने आप में संपूर्ण योग भी है।

प्रश्न:1 सतयुग किस काल को माना जाता है?

(क) जहाँ सत्य और जीवन की रक्षा के लिए सभी क्रियाएँ होती हैं

(ख) शारीरिक और मानसिक स्तर पर आध्यात्मिक लक्ष्य हासिल करना

उत्तर: (क) जहाँ सत्य और जीवन की रक्षा के लिए सभी क्रियाएँ होती हैं

प्रश्न:2 दिए गए वाक्य में क्रिया पहचान कर नाम बताइए।

'पर्यटन हीं विकास है।'

(क) अकर्मक

(ख) सकर्मक

उत्तर: (क) अकर्मक

प्रश्न:3 दिए गए शब्द से प्रत्यय अलग कीजिए - 'भौतिक'।

(क) ईक

(ख) इक

(ग) तिक

(घ) तइक

उत्तर: (ख) इक

प्रश्न:4 पतंजलि ने योग के कितने अंग बताए हैं?

(क) दस

(ख) बारह

(ग) आठ

(घ) नौ

उत्तर: (ग) आठ अंग

प्रश्न:5 पर्यटन का क्या अर्थ है?

(क) देश-विदेश घूमना

(ख) विदेश जाना

(ग) प्राकृतिक दृश्य देखना

(घ) जीने की कला का विकास

उत्तर: (घ) जीने की कला का विकास

अपठित गद्यांश 7

संसार में शांति, व्यवस्था और सद्भावना के प्रसार के लिए बुद्ध, ईसामसीह, मुहम्मद, चैतन्य, नानक आदि महापुरुषों ने धर्म के माध्यम से मनुष्य को परम कल्याण के पथ का निर्देश किया, किंतु बाद में यही धर्म मनुष्य के हाथ में एक अस्त्र बन गया। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि धर्म के नाम पर पृथ्वी पर जितना रक्तपात हुआ है उतना और किसी कारण से नहीं। मनुष्य जाति विपन्न हो गई। परन्तु धीरे-धीरे मनुष्य सहज शुभ-बुद्धि से धर्मोन्माद तथा धर्म के नशे से हो चुके और हो सकने वाले अनर्थ को समझने लग गया है। यह आशाप्रद बात है।

भौगोलिक सीमा और धार्मिक विश्वास जनित भेदभाव अब धरती से शनै: शनै: मिटते जा रहे हैं। विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ संचार के साधनों में अभूतपूर्व अभिवृद्धि हुई है, जिससे देशों के बीच दूरियाँ कम हो गई हैं। अब एक देश दूसरे देश को अच्छी तरह जानने लग गया है। फिर, संयुक्त राष्ट्र संघ, जो संसार के 192 देशों का एक मिलाजुला मंच है अंतर्राष्ट्रीयता की भावना को फैलाने तथा विभिन्न देशों के आपसी मनमुटाव को दूर करने में प्रयत्नशील है। फिर भी संसार में वर्णभेद की समस्या आज भी वर्तमान है। यह बड़े दुख की बात है कि जब हम इक्कीसवीं सदी में अग्रसर हो रहे हैं और पृथ्वी के सभी प्रगतिशील देश

अखंड विश्व की कल्पना के कार्यान्वयन में लगे हैं, तब भी वर्णभेद का यह कलंक दुनिया से दूर नहीं हो रहा।

जो भी हो, संसार के सब मनुष्य एक हैं। समस्त भेद कृत्रिम हैं और वे मिटाए जा सकते हैं। अमृत संतान है मानव! विश्व के समस्त जीवों में श्रेष्ठतम है। असीम शक्ति है उसमें। अपनी बुद्धि और मन से वह असाध्य-साधन कर सकता है। आवश्यकता है शिक्षा के व्यापक प्रसार की, जो मानवीय मूल्यों के महत्त्व के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने का एक मात्र साधन है। इसी बोध के द्वारा वह अपने को सब प्रकार की संकीर्णता के कलुष से मुक्त करके अपनी दृष्टि को निर्मल और विस्तीर्ण बना सकता है। संसार के सभी विवेकशील व्यक्ति इस दिशा में सक्रिय हैं।

प्रश्न:1 इस गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(क) शांति व सद्भावना का प्रसार

(ख) भौगोलिक सीमा

(ग) देशों की दूरियाँ

(घ) मानवीय मूल्य

उत्तर: (क) शांति व सद्भावना का प्रसार

प्रश्न:2 धर्म के माध्यम से किसका निर्देश मिलता है?

(क) धर्म के माध्यम से मनुष्य को प्रयत्नशील रहने का निर्देश मिलता है

(ख) धर्म के माध्यम से भौगोलिक परिचय मिलता है

(ग) संकीर्णता के कलुष से मुक्ति मिलती है

(घ) परम कल्याण के पथ का निर्देश किया जाता है

उत्तर: (घ) परम कल्याण के पथ का निर्देश किया जाता है

प्रश्न:3 'अत्याचार' शब्द को विशेषण बनाकर लिखिए।

(क) अनाचार

(ख) अत्याचारी

(ग) अत्याचारकारी

(घ) अनाचारी

उत्तर: (ख) अत्याचारी

प्रश्न:4 मनुष्य में क्या असीम शक्ति होती है?

(क) दूसरों को उपदेश देना

(ख) सही ग़लत का अनुमान लगा सकना

उत्तर: (ख) सही ग़लत का अनुमान लगा सकना

प्रश्न:5 संचार के साधनों की अभिवृद्धि का क्या परिणाम हुआ?

(क) हम अर्थों को समझने लगे

(ख) मूल्यों के महत्त्व की जानकारी बढ़ी

(ग) आपसी मनमुटाव दूर हो गए

(घ) दूरियाँ कम हो गईं

उत्तर: (घ) दूरियाँ कम हो गईं

अपठित काव्यांश 1

ओ दिन के अवसान! धरा पर दिवाली लाए।

हर घर में, पथ में निर्जन में हरियाली लाए,

बाल हँसते मुस्कराते हैं।

युवा अनेकों दीपों में तन्मय हो जाते हैं।

आरती सी नव बालाएँ।

दीप ज्योति में ढूँढ रही अपनी अभिलाषाएँ

कल कोमल किसलय जिस पर आँचल फैलाते हैं।

आ-आ कर मदमत्त मधुप गण गायन गाते थे।

फूल फूला था उपवन में।

सौरभ बिखरा था निर्जन में, नील गगन, घन में

बहारें आँख मिलाती थी।।

आ-आकर तितली मादक मकरंद लुटाती थीं।

प्रश्न-1 दिपावली पर क्या होता है?

(क) हरियाली आती है

(ख) बच्चे हँसते खेलते हैं

(ग) दीपक जलाए जाते हैं

(घ) युवा तन्मय रहते हैं

सही उत्तर – (ग) दीपक जालए जाते हैं

प्रश्न-2 बालाएँ क्या ढूंढ रही हैं?

(क) अपनी अभिलाषाएँ

(ख) अपना सुख

(ग) अपना जीवन

(घ) अपना दीप

सही उत्तर – (क) अपनी अभिलाषाएँ

प्रश्न-3 फूलों पर कौन गाते रहते हैं?

(क) तितली

(ख) भौंरे

(ग) पतंगे

(घ) मधुमक्खी

सही उत्तर – (ख) भौंरे

प्रश्न-4 नील गगन, घन में क्या बिखरा हुआ था?

(क) खुश्बू

(ख) सुन्दरता

(ग) सौरभ

(घ) पराग

सही उत्तर – (ग) सौरभ

प्रश्न-5 'निर्जन' शब्द में से उपसर्ग अलग करिए।

(क) नि: + जन

(ख) निर् + जन

(ग) निर + जन

(घ) नि + र्जन

सही उत्तर – (ख) निर् + जन

अपठित काव्यांश 2

समर निंद्य है धर्मराज पर

कहो शांति वह क्या है?

जो अनीति पर स्थित होकर

भी बनी हुई सरला है।

सुख समृद्धि का विपुल कोष

संचित कर कल बल छल से।

किसी क्षुधित का ग्रास छीन,

धन लूँट किसी निर्बल से।

सब समेट प्रहरी बिठलाकर

कहती कुछ मत बोलो

शांति-सुधा बह रही न इसमें

गरल क्रांति का घोलो।

हिलो-डुलो मत, हृदय रक्त

अपना, मुझको पीने दो

अचल रहे साम्राज्य शांति का

जियो और जीने दो।

प्रश्न-1 कवि धर्मराज से किसकी बात कर रहा है?

(क) शांति की

(ख) नीति की

(ग) अनीति की

(घ) समर की

सही उत्तर – (ग) अनीति की

प्रश्न-2 सुख समृद्धि का कोष किससे भरा जाना बताया गया है?

(क) छल से

(ख) बल से

(ग) कल से

(घ) 1,2,3 तीनों से

सही उत्तर – (घ) 1,2,3 तीनों से

प्रश्न-3 जहाँ शांति का अमृत बह रहा हो उसमें क्या नहीं घोलना चाहिए?

(क) विष

(ख) क्रान्ति गरल

(ग) प्रहरी

(घ) रक्त

सही उत्तर – (ख) क्रान्ति गरल

प्रश्न-4 'जियो और जीने दो' को चरितार्थ करने के लिए क्या आवश्यक है?

(क) क्रांति

(ख) हिलना डुलना नहीं

(ग) शांति का साम्राज्य

(घ) हृदय रक्त पीना

सही उत्तर – (ग) शांति का साम्राज्य

प्रश्न-5 'विपुल' शब्द का शब्दार्थ बताइए।

(क) बिना पुल के

(ख) बहुत बड़ा

(ग) पुल जैसा

(घ) मुशकिल

सही उत्तर – (ख) बहुत बड़ा

अपठित काव्यांश 3

यह हार एक विराम है, जीवन महा संग्राम है

तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख में लूगाँ नहीं,

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए, अपने खंडहरों के लिए

यह जान लो मैं विश्व की, संपति चाहूँगा नहीं,

क्या हार में क्या जीत में, किंचित नहीं भयभीत मैं

साघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही

लघुता न अब मेरी छुओ, तुम महान बने रहो

अपने हृदय की वेदना मैं व्यर्थ त्यागूंगा नहीं

चाहे हृदय को ताप दो चाहे मुझे अभिशाप दो

कुछ भी करो कर्तव्य पथ से किंतु माँगगा नहीं

वरदान माँगूगा नहीं।

प्रश्न-1 जीवन को कवि ने क्या बताया है?

(क) विराम

(ख) महासंग्राम

(ग) प्रहरी

(घ) वरदान

सही उत्तर – (ख) महासंग्राम

प्रश्न-2 'अपने खंडहरों' से कवि क्या बताना चाहता है?

(क) टुटे मकान

(ख) पुराने जर्जर घर

(ग) गरीबी

(घ) वेदना

सही उत्तर – (ग) गरीबी

प्रश्न-3 कविता में कवि किसकी भीख नहीं लेना चाहता?

(क) महानता की

(ख) दया की

(ग) ताप की

(घ) संपत्ति की

सही उत्तर – (ख) दया की

प्रश्न-4 कवि अपने आपको किस पथ से नहीं भागने देना चाहता?

(क) कर्तव्य

(ख) अभिशाप

(ग) वेदना

(घ) लघुता

सही उत्तर – (क) कर्तव्य

प्रश्न-5 'शाप' शब्द का विलोम शब्द काव्यांश में से छाँटिए।

(क) ताप

(ख) अभिशाप

(ग) अभिश्राप

(घ) अभिताप

सही उत्तर – (ख) अभिशाप

अपठित काव्यांश 4

अपने नहीं अभाव मिटा पाया जीवन भर

पर औरों के सभी अभाव मिटा सकता हूँ

तूफानों-भूचालों की भयप्रद छाया में

मैं ही एक अकेला हूँ जो गा सकता हूँ।

मेरे मैं की संज्ञा भी इतनी व्यापक है

इसमें मुझसे अगणित प्राणी आ सकते हैं।

मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है।

मैं खंडहर को फिर से महल बना सकता हूँ

जब-जब भी मैंने खंडहर आबाद किए हैं।

प्रलय मेघ भूचाल देख मुझको शरमाए

मैं मज़दूर। मुझे देवों की बस्ती से क्या।

प्रश्न-1 'मैं' शब्द कवि ने किसके लिए कहा है?

(क) किसान

(ख) मज़दूर

(ग) गरीब

(घ) भूखा

सही उत्तर – (ख) मज़दूर

प्रश्न-2 अगणित प्राणी केवल एक शब्द में आ जाते हैं। वह क्या है?

(क) तुम

(ख) वह

(ग) मैं

(घ) कौन

सही उत्तर – (ग) मैं

प्रश्न-3 मजदूर क्या कर सकता है?

(क) खंडहर आबाद

(ख) महल का निर्माण

(ग) विश्वास

(घ) गा

सही उत्तर – (क) खंडहर आबाद

प्रश्न-4 मज़दूर को देखकर क्या शरमा जाता है?

(क) प्रलय

(ख) मेघ

(ग) भूचाल

(घ) 1,2,3 तीनों

सही उत्तर – (घ) 1,2,3 तीनों

प्रश्न-5 'अदम्य' में से उपसर्ग छाँटिए।

(क) अ + दम्य

(ख) अद + म्य

(ग) अ: + दम्य

(घ) अति + दम्य

सही उत्तर – (क) अ + दम्य

अपठित काव्यांश 5

देखा एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है

उसके नीचे हैं –

छोटे छोटे कुछ पौधे, तने हुए उद्दंड।

देखकर मुझको गरजे,

हमको छोटा रखकर ही यह बड़ा बना है,

जन्म अगर हम पहले पाते, तो हम इसके अग्रज होते

हम इसके दादा कहलाते, इस पर छाते

नहीं वक्त का जुल्म हमेशा

हम यों ही सरते जाँएगे, हम काँटों की

आरी और कुल्हाड़ी अब तैयार करेंगे।

फिर जब आप यहाँ आएँगे

बरगद की डाली-डाली कटती पाएँगे;

ठूँठ मात्र यह रहा जाएगा

नंगा-बूचा

और निगल जाएँगे तब हम इसे समूचा।"

प्रश्न-1 कविता में छोटे पौधे बरगद के बड़े होने का क्या कारण बताते हैं?

(क) उन्हें छोटा रखना

(ख) बाद में पैदा होना

(ग) सूखा होना

(घ) बहुत प्राचीन होना

सही उत्तर – (क) उन्हें छोटा रखना

प्रश्न-2 बरगद के पेड़ का क्या अपराध था?

(क) बड़ा होना

(ख) दादा कहलाना

(ग) छाया देना

(घ) पहले जन्म लेना

सही उत्तर – (क) बड़ा होना

प्रश्न-3 पौधे किसकी आरी बनाना चाहते हैं?

(क) लोहे की

(ख) काँटों की

(ग) झाडियों की

(घ) डालियों की

सही उत्तर – (ख) काँटों की

प्रश्न-4 छोटे पौधों की बरगद के लिए क्या चाह है?

(क) ठूँठ मात्र रह जाना

(ख) सूख जाना

(ग) कट जाना

(घ) छोटा होना

सही उत्तर – (क) ठूँठ मात्र रह जाना

प्रश्न-5 'अग्रज' शब्द का विलोम शब्द बताइए।

(क) बडा

(ख) नीरज

(ग) अनुज

(घ) सग्रज

सही उत्तर – (ग) अनुज